एन.सी.एल. में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एन.सी.एल.), पुणे में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस आयोजित किया गया । इस अवसर पर ख्यातिप्राप्त तंत्रिकारोग चिकित्सक (न्यूरोसर्जन) एवं अध्यक्ष, राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र सोसायटी, नई दिल्ली के प्रो. पी.एन. टंडन ने **मानव मस्तिष्क : एक अविश्वसनीय रासायनिक कारखाना** नामक विषय पर विशेष व्याख्यान दिया ।

एन.सी.एल. में प्रतिवर्ष राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर शोधछात्र पोस्टरों के माध्यम से अपने शोधकार्य प्रस्तुत करते हैं । इस वर्ष भी दि. 24 एवं 25 फरवरी, 2005 को रासायनिक एवं सम्बद्ध विज्ञान की छह विधाओं से 130 पोस्टर प्रदर्शित किए गए थे । इससे पूर्व वर्ष के वैज्ञानिक पुरस्कार विजेता डॉ.एस. राधाकृष्णन, बहुलक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी प्रभाग तथा डॉ.एस.एस. तांबे, रासायनिक अभियांत्रिकी एवं प्रक्रिया विकास प्रभाग ने श्रोताओं के समक्ष अपने शोधकार्य प्रस्तुत किए । इसके अलावा भौतिक एवं पदार्थ विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान एवं अभियांत्रिकी विज्ञान की विधाओं में उत्कृष्ट शोधकार्य हेतु दिए जाने वाले कीर्ति संगोराम स्मारक धर्मादा पुरस्कार के विजेता शोधछात्रों तथा कार्बनिक रसायन विज्ञान में उत्कृष्ट शोधपत्र हेतु डॉ. राजप्पा पुरस्कार प्राप्त विजेताओं ने अपने शोधकार्य प्रस्तुत किए ।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर बोलते हुए प्रो. टंडन ने कहा, **मानव मस्तिष्क की तरह जटिल प्राकृतिक अथवा मानव निर्मित ऐसा कोई अंग या जीव नहीं है । हम इस मोहक एवं जटिल अंग के बारे में बहुत कम जानते है ।** उन्होंने वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि वे विज्ञान के इस चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में शोधकार्य करें । उन्होंने आगे कहा कि हमें मानव मस्तिष्क के बारे में जितनी भी जानकारी है उसमें से 90 प्रतिशत जानकारी हमने गत 10-15 वर्षों में प्राप्त की है । उन्होंने सूचित किया कि मानव मस्तिष्क की क्षमता एनसाइक्लोपिडिया ब्रिटानिका के 7550 खंडों को संग्रहीत करने की है ।

प्रो. टंडन ने स्मरणशक्ति एवं सीखने की प्रक्रिया को विस्तार से प्रतिपादित करते हुए मानव मस्तिष्क की सुनम्यता एवं लचीलेपन की प्रशंसा की । उन्होंने कहा कि सिर की चोट, ह्दयाघात (स्ट्रोक) तथा अल्झायमर के रोग सामान्य रूप से एक-दूसरे से जुड़े हुए है । उन्होंने आगे कहा **अल्झायमर रोग का प्रभाव 65 वर्ष से अधिक की आयु वाले लोगों में तथा उससे अधिक प्रभाव 85 वर्ष एवं उससे ऊपर की आयु की जनसंख्या के 11 प्रतिशत लोगों में ही पाया जाता है परन्तु चूँकि लोगों की आयु बढ़ रही है अत: भविष्य में हम इस रोग का प्रादुर्भाव और अधिक लोगों में देख सकेंगे । बाजार में कुछ औषधियाँ उपलब्ध हैं जो इस रोग के प्रारंभ को कुछ अधिक समय तक रोक सकती है किन्तु उसे ठीक नहीं कर सकती ।**

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह के आरम्भ में डॉ. एस. शिवराम, निदेशक, एन.सी.एल. ने अपने स्वागत सम्बोधन में श्रोताओं को प्रो. टंडन का परिचय देते हुए उन्हें संस्था निर्माता के रूप में उद्धृत किया जिन्होंने हाल ही में **राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र,** गुडगांव (हरियाणा) की स्थापना की है । डॉ. शिवराम ने कहा **प्रो. टंडन वैज्ञानिकों की उस दुर्लभ श्रेणी में आते हैं जो सर्जन के रूप में प्रैक्टिस भी करते हैं और एक वैज्ञानिक भी हैं ।** अन्त में विज्ञान की प्रत्येक विधा के 2 छात्रों को उत्कृष्ट पोस्टरों के लिए प्रो. टंडन ने पुरस्कार प्रदान किए ।